आश्वस्तकारी है मीडिया का वर्तमान परिदृश्य : आनंद

विश्वविद्यालय के प्रेरणा पुरुष पंडित माखनलाल चतुर्वेदी के जन्मदिन चार अप्रैल को विश्वविद्यालय अपनी स्थापना के बाद से एक स्मृति उत्सव के रूप में मनाता है। इस व्याख्यान में डॉ. जयन्त विष्णु नारलीकर, प्रो. यशपाल, शिवानी, पं. विद्यानिवास मिश्र, प्रो. श्यामाचरण दुबे प्रभृति विद्वान आते रहे हैं। इस वर्ष स्मृति व्याख्यानमाला के मुख्य अतिथि नवभारत टाइम्स दिल्ली के संपादक श्री मधुसूदन आनंद एवं अध्यक्ष मध्यप्रदेश मानव अधिकार आयोग के पूर्व अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री आर.डी. शुक्ल थे। इस वर्ष व्याख्यान का विषय था– ''मीडिया का समकालीन परिदृश्य''।

श्री आनंद वर्तमान मीडिया परिदृश्य के प्रति बड़े ही आश्वस्त नजर आये। वे मानते हैं कि समकालीन मीडिया परिदृश्य सकारात्मक और संभावनाओं से भरा है, भले ही कुछ मायने में अपसंस्कृति फैलाने वाला भी है, पर जन जागरुकता और विभिन्न विचारों के प्रसार में केन्द्रीय भूमिका अदा कर रहा है। उन्हें उस पर गर्व है।

उन्होंने इस बात से भी असहमति जताई कि वर्तमान मीडिया का पूरा परिदृश्य पतनोन्मुखी हो गया है। उनका कहना है कि समय विचार और सरोकार दोनों ही पैदा करता है। आजादी के पूर्व पत्रकारिता का एकमात्र ध्येय आजादी के लिये संघर्ष का वातावरण बनाना था। आजादी के बाद मीडिया ने लोगों को चेतना सम्पन्न बनाया और एक सुरक्षा कवच का अहसास कराया है। तमाम पतन के बाद भी मीडिया की इस महत्वपूर्ण भूमिका से इंकार नहीं किया जा सकता। वे पश्चिमी देशों के मुकाबले भारतीय पत्रकारिता की मौजूदा स्थिति को लेकर ज्यादा आशान्वित हैं। उनका कहना है कि जहाँ पश्चिमी देशों में इलेक्ट्रॉनिक और न्यू मीडिया के कारण अखबारों के सामने पाठकों की घटती संख्या एक बड़ी चिंता है, वहीं भारत में अखबारों विशेषकर भारतीय भाषाओं के पाठकों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। भारतीय पाठक प्रतिबद्ध है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का भी निरंतर विस्तार हुआ है। न्यू मीडिया हमारे देश में अभी शैशवावस्था में है इसलिये समाचार पत्रों को कोई खतरा नहीं है। आजादी के बाद राष्ट्रीय विकास और साक्षरता ने मीडिया के विस्तार तथा विकास को नये आयाम दिये हैं। अखबारों और अन्य माध्यमों में समाचारों की प्रस्तुति में आ रहे बदलाव और विचारों और सरोकारों के हाशिए पर पहुँच जाने को कुछ हद तक स्वीकार करते हुये श्री आनंद ने कहा कि ऐसा नहीं कि वह बिल्कुल विचार नहीं दे रहे हैं। अखबार विभिन्न विचारों को भी सामने ला रहे हैं। विचारों के स्तर पर मीडिया में कोई समझौता नहीं है।

कुलपति श्री अच्युतानंद मिश्र ने स्वागत उद्बोधन में कहा कि समकालीन पत्रकारिता के परिदृश्य में भारी विचलन है, बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के तेजी से हुए फैलाव ने मीडिया की परिभाषा और मान्यताओं में भारी बदलाव ला दिया है। आज मीडिया के समक्ष लोक विश्वसनीयता का बड़ा संकट उपस्थित है, मीडिया की युवा पीढ़ी को अपने कार्यक्षेत्र में इन्हीं चुनौतियों से दो चार होना है।

अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री आर.डी. शुक्ल ने पत्रकारों की नई पीढ़ी को संस्कारित और आदर्शोन्मुखी होने पर जोर दिया क्योंकि बिना आदर्श के कोई व्यक्ति, समाज या देश उन्नति नहीं कर सकता। आज का मीडिया व्यवसायीकरण के कारण आदर्श भूल रहा है। उन्होंने कहा कि भारतीय संविधान ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान की है, जिसका सीधा संबंध मीडिया से है, किन्तु इस अधिकार का उपयोग मर्यादा के साथ किया जाना चाहिये। श्री शुक्ल ने विद्यार्थियों से मूल्यों, आदर्शों और हौसले के साथ बढ़ने का आह्वान किया। आभार व्यक्त करते हुये विश्वविद्यालय के कुलाधिसचिव श्री ओ.पी. दुबे ने कहा कि पत्रकारों का जीवन आदर्श से भरा और सत्य के निकट होना चाहिये, ताकि वे आम आदमी की दुख तकलीफ के वास्तविक पैरोकार बन सकें।

विश्वविद्यालय भवन में आयोजित इस कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन और दादा माखनलाल चतुर्वेदी के चित्र पर पुष्पांजलि से हुआ। इस मौके पर विश्वविद्यालय के छात्रों ने श्री आलोक चटर्जी के निर्देशन में दादा की कविताओं का मंचन किया। इसके पूर्व विश्वविद्यालय की ओर से श्री शुक्ल और श्री आनंद का शाल-श्रीफल से सम्मान किया गया। समारोह में राजधानी के अनेक विद्वान, पत्रकार, मीडियाकर्मी और विश्वविद्यालय के प्राध्यापक तथा विद्यार्थीगण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अनिल चौबे ने किया।

सुधांशु मिश्र